9. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

''जिस आयु विहीन प्रदेश में उखड़ी हुई सांसों पर बंधन हो—अर्गला हो वहाँ रहते-रहते यह जीवन असह्य हो गया था। तो भी मरूंगी नहीं। संसार के कुछ दिन विधाता के विधान में अपने लिए सुरक्षित करा लूंगी। कुमार! तुमने वही किया, जिसे मैं बचाती रही। तुम्हारे उपकार और स्नेह की वर्षा से मैं भीगी जा रही हूँ। ओह! इस वक्षस्थल में दो हृदय हैं क्या ? अब अंतरंग हाँ करना चाहता है, जब ऊपरी मन 'ना' क्यों कह देता है।''



# HD–03

## June – Examination 2022

# B.A. (Part-I) Examination

## HINDI SAHITYA

## हिन्दी गद्य भाग-II (नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ)

## Paper : HD-03

*Time : 1½ Hours* ] [ *Maximum Marks : **70***

**निर्देश :-** यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

**खण्ड—अ** **4×3½=14**

**(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)**

**निर्देश :-** किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3½ अंक का है।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) नाटक के प्रमुख तत्त्वों का उल्लेख कीजिए।

(ii) 'आवारा मसीहा' किस महान रचनाकार की जीवनी है ?

(iii) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के प्रमुख पात्रों के नाम लिखिए।

(iv) 'महाभारत की एक साँझ' किस विधा की रचना है ?

(v) 'भोलाराम का जीव' के लेखक का नाम बताइये।

(vi) 'अदम्य-जीवन' के रचनाकार का नाम बताइये।

(vii) 'हालावाद' का प्रवर्तक किसे माना जाता है ?

(viii) डॉ रामविलास शर्मा की किन्हीं **दो** आलोचनात्मक कृतियों के नाम लिखिए।

**खण्ड—ब** **4×14=56**

**(लघु उत्तरीय प्रश्न)**

**निर्देश :-** किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

2. आलोचना का अर्थ एवं स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

3. नाटक एवं एकांकी में तात्विक अंतर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।



4. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की कथावस्तु का उल्लेख कीजिए।

5. हास्य और व्यंग्य रचना में अंतर स्पष्ट कीजिए।

6. "घीसा सच्चा गुरुभक्त है।" सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

7. 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी के आधार पर युधिष्ठिर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

''मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा ? बड़े-बड़े नेता कहते हैं, वस्तुओं की कमी है, और मशीन बैठाओ, और उत्पादन बढ़ाओ, और धन की वृद्धि करो, और बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाओ। एक बूढ़ा कहता था—बाहर नहीं, भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ, क्रोध और द्वेष को दूर करो, लोक के लिए कष्ट सहो, आराम की बात मत सोचो, प्रेम की बात सोचो। आत्मतोषण की बात सोचो, काम करने की बात सोचो। उसने कहा प्रेम ही बड़ी चीज है, क्योंकि वह हमारे भीतर है।''